

## बिहार के आनंद कुमार आईआईटी की तैयारी कर रहे गरीब प्रतिभावान छात्रों के लिए किसी मसीहा से कम नहीं हैं। उनकी बनाई 'सुपर-30' योजना से अब तक सैकड़ों छात्रों का आईआईटी में प्रवेश का सपना साकार हुआ है।

**बि**हार में पटना जिले के चांदपुर बेला गांव में रहने वाले छत्तीस वर्षीय आनंद कुमार को लोग उनके नाम से कम और रियल हीरो के नाम से ज्यादा जानते हैं। आम इंसान से हीरो बनने का सफर खासा संघर्षमय और प्रेरणादायक रहा। कल तक कच्ची बस्ती में रहने वाले आनंद बचपन में वैज्ञानिक बनने का ख्वाब रखते थे। लेकिन घर की परिस्थितियां इतनी विकट थीं कि गुजर-बसर करने के लिए भी उन्हें खासा संघर्ष करना पड़ा। पिता की मृत्यु के बाद पूरे परिवार की जिम्मेदारी आनंद पर आ गई। घर का खर्चा चलाना और पढ़ाई पर भी ध्यान देना, दोनों में सामंजस्य बिठाना मुश्किल था, लेकिन आनंद और उनकी मां ने हिम्मत नहीं हारी। घर खर्च चलाने के लिए मां पापड़ बनाती और आनंद ट्यूशन पढ़ाते। सुबह से दोपहर आनंद खुद पढ़ते, स्कूल जाते। शाम को पटना की कॉलोनियों में घर-घर जाकर पापड़ बेचते और रात को बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर अपना गुजारा चलाते। ऐसे माहौल में ही उन्होंने गणित विषय में कॉलेज टॉप कर स्नातक किया। गणित में पीएच डी करने के लिए उन्होंने एक मित्र के कहने पर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के लिए आवेदन किया। सभी टैस्ट पास करने के बावजूद पैसों के अभाव में वे कैम्ब्रिज नहीं जा पाए।

कैम्ब्रिज में मौका चूकने से वे निराश जरूर हुए लेकिन हताश नहीं। उन्होंने ऐसी योजना बनाई, जिससे उन जैसे गरीब छात्रों का सपना कभी न टूटने पाए। उन्होंने गरीब लेकिन प्रतिभावान छात्रों के



बेमिसाल

एडमिशन दिलाने के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रहे हैं। उनके इस असाधारण काम को देख मुकेश अंबानी ने उन्हें 2008 का 'रियल हीरो अवॉर्ड' भी दिया। यही



नहीं उनके एक खास तबके के लिए समर्पण और दृढ़ इच्छा शक्ति को देख डिस्कवरी चैनल ने एक घंटे की 'सुपर-30 का कमाल' टाइटल से फिल्म बनाई है। इस

# आईआईटीयंस का हीरो

लिए 2002 में 'सुपर-30' नाम से एक योजना शुरू की। इसमें एक प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से वे देशभर के तीस गरीब छात्रों का चयन कर उन्हें इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) के लिए तैयार करते हैं। यही नहीं गरीब छात्रों को निःशुल्क कोचिंग के अलावा उनके रहने, खाने की व्यवस्था का

जिम्मा भी आनंद उठाते हैं। उनकी मेहनत का ही नतीजा रहा कि 2003 में तीस छात्रों में से 18, इसके अगले साल 22, 2005 में 26, 2006 और 07 में 28-28 और पिछले साल सभी 30 छात्रों ने आईआईटी में प्रवेश पाया। पिछले कई वर्षों से आनंद गरीब तबके के छात्रों को तैयार कर उनकी उच्च शिक्षा

के लिए रास्ता खोल रहे हैं। इस योजना में छात्रों पर होने वाले खर्च को निकालने के लिए उन्होंने 'आनंद रामानुजम स्कूल ऑफ मैथेमैटिक्स' शुरू किया, जिसमें सामान्य छात्र पढ़ाई कर सकते हैं। इससे प्राप्त पैसे को 'सुपर-30' के छात्रों को बेहतरीन सुविधा देने में लगाते हैं। इस साल भी वे सभी 30 छात्रों को आईआईटी में

बारे में आनंद कहते हैं, 'मुझे खुशी होती है, जब मेरे छात्रों के बारे में और मेरी मेहनत के बारे में लोग प्रतिक्रिया देते हैं, प्रशंसा करते हैं। गरीब प्रतिभावान बच्चों को मैं उनके मुकाम तक पहुंचाने में कामयाब रहूं, बस यही मेरी सबसे बड़ी जीत है।'

■ हेतप्रकाश व्यास